

DPN 6466

Title : १) भीमसेन अष्टोत्तर शतनाम २) ग्रह गोचर फल
1) BHĪMASENA ASTOTTAR ŚĀTANĀMA
2) GRAHA GOCĀRA PHALA

Run. No. 7191

Cat. No.

Micro. No.

Subject *श्लोक व श्रुति*

Religion : Hindu / Bauddha

Hymn and Astrology

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 15 X 6

Folios 18

Lines (in a page) 5/7

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS 899

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaśaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

५

५

इति ग्रह गोचर फल समाप्त ॥ ॥ सावक ८९९ साध मासे हु पक्षे
ग्यामे ॥

विमल ताम्रकार, खोदप

Vimal Tamrakar, Khovpa
(Bhaktapur)

5



0

cm.

5

10

15

कर्कयूय विषयदहनवध्रवा न्नाथे विविधा ग ४॥
 इके बागदू ४ र्वधनहनि न्नाथे विविधा ग ४॥
 हानिहोम विद्याठानन विपू न्नाथे विविधा ग ४॥
 वमाना थलाह रुवगिरु रु गत त वा हा गल विविधा ग ४॥
 सा थ सा र्वा विगग म द व लो य र्वा विविधा ग ४॥

अथ किं ४ ह नीय विजयसुखदुःखगुणसुखदुःख
 अथ किं स्मृतिजयवरुयकिमालहमिगावृधेनार्कभज्जी
 वन्दरुमिद्युमिबसुनगुवृ४ ह विजयविना ४१४ सोर्यावि
 र्द्वज्जगद्गहयमहिर्वरुमिमाप्रमन्द ॥ ॥ नागभय
 र्द्वज्जगद्गहयमहिर्वरुमिमाप्रमन्द ॥ ॥ नागभय

१०
कुरुनि कुरुज ० वग दो च द ऊ द य सो र्या मो द्यं पीण च
व ऊ रु व नि व गु बो रा ग वि भ कि हो (मे ला कें द वा १ क प
वि यु व नि ध न सू द न वि य था (मे ग द ४ ॥ ५ ॥ पू ण १ कें द्री वि
था (मे वू ग नि कू य पे गो या धि दारु (मे (मे का हो भ वू कू पू
भ शा रु य म थ भ मि ऊ म्नी सू ना दो क लि ४ स्या न् जी व यू यो थ

५
ला रा सू ख म् भ न मि यु धि व (थ वि ना भ दा षा त्य हि वि व
द ध न सू ग वि न हं सू य पि षा द दा नि ४ ॥ ६ ॥ ष ष सू य भु रु
स्या द रु नि ग द सू च नि ना ग ० आ ग (थे व सो थि व क वि ना (मे ध
न म थ वि धू ज स्का न सो रा ग्ध सी य न । दू ४ र्व जी व वि व धि रु व
निय वि रु वा ना ग दा यी च भु क्क जी ण दि या गि ना हि नि रु न वि

पूगदाहो लज्जासूर्याय नमः ॥ १ ॥ येन कृष्णं गजं सु दिनकृतिः
हिम (गोमान विलान्न भया, सुयाय नमः कृष्णं कलह सवनि
ऊर्द्ध कलिकाल हा नि ॥ जीव रुद्रा न्न भया विस न धन वनि
॥ श्रीजदू ॥ सर्व भुक्, दूना धन नीय या नि न्न ज न वि बहिर्न
॥ सूर्यजि दीन यक्षा ॥ ॥ न ॥ नृक्या सा दू ॥ सर्व मृत्यु दिनकृति

निधन नय नृकृ ही ॥ मम कि, मृत्यु रोम धनि (मावत मूदूय
मिज विल पुया कि सोरखी जीव माना धनि (मम न्न लम विरुय
य वलक्षी भुक्, या ल धन सूर्य मुद्रि विन वि बहिर्न ॥
की लय हा ॥ १ ॥ यूर्य ॥ ॥ न ॥ नृक्या कक्ष य दे न्य दिनकृति नव
भक्त कि नृक्या मगं दू ॥ ॥ न ॥ नृक्या कक्ष य दे न्य दिनकृति नव

म।

10
 सुग. ६ सि. वा. (ग. व. (ध. व. ॥ जीवक म्मा धे सि दि ४ सुख म सुव नु
 धी. धर्म माना र्थ ला रु. न ह द वा र्क यू व यु व नि वि य सु ग यी धि
 न ४ या य भा ल ४ ॥ २ ॥ का ष्म सि दि ४ ऊ या वा व वि म नि हि म (ग
 क र्म (ग क र्म सि दि ४ सो र्थ सो मा र्थ ला रु ध न यु व नि सु र्व व
 नु ऊ वे वि ना म ॥ क ल्य ण ना र्थ दे ना न गु व नि वी रु

5
 ग वि वि रु न ह, म न्य षा धि ष क र्त्त रु व नि न वि सु ग की र्ति वि
 या र्थ ना ४ ॥ १ ॥ आ य र्क मा न ल वि रु व उ यू य नो मि य था
 (ग म दा द्या, रु ऊ थ फि ऊ या (ध ध न सु व न यु व नि सो र्था
 नि मो म्मा ॥ सो र्थ थ ना र्थ दा ना सू य गु व नु म ना क्री य ता थ
 न दा ना म न्दे ला रु प या न वि वि ध ध न च य रु के ना म रु

नाम ॥ १ ॥ ह्यविन्दमहि ऊ ॥ अभिजसूत्र गुत्र ॥ सूर्यज
अभ्यागा, दद्यानि ह्ययं वतानव नृपति रुयं मुक्ता विकार्य
विनाम ॥ सनाय ॥ मयूहीति ॥ यत्रिरुवमस्त्रिविरुनाम
नृजय, ययुक्ती गन्धमाल्यादि विलगुरु सूद्र सूर्ययागः
सिगहं ॥ १ ॥ उकाद ॥ मयूद मयसु ह तीयवा ॥ मयूद

ध्वनरुतमिदं विविधं धनाफि ॥ आवाग्धमवचसदाविज
यं वसो रथं, स्कानकथ विवहिन ॥ स्वजनस्य दृष्टिं ॥ १ ॥
जन्मद्वियं वनवसु फवुर्थ विरु, स्वरुनिबण विचवन
प्रकवागिपीला ॥ आवादनं वियु मर्दनमथनाम, वाग
प्रवासमव ॥ निविवाहमूर्य ॥ १ ॥ कुरु, तीयगुरु कुरु

यदि ब्रह्म वा (॥) वकाय (॥) वावे जयं यमस्य तु ल्यं । नि
 र्यववर्तु धनका ॥ नमिष्य लार्हं कृष्णानुष्मिह दवस्य
 मयि प्रयाग ॥ जन्मा श्रयध्वं नव विरु वरुध वा (॥) स
 का ह्रमेव दममवक शानि निर्यं । सन्नाय (॥) क रुय वि
 द्रुह नाथ नाम निर्यह मय विरु वध्वं क शानि क रुध ॥

॥ २॥ ॥ निर्य विरु वध्वं क शानि क रुध ॥ ॥ ॥
 ॥ ३॥ ॥ दाद ॥ ह्रमेव दममवक शानि निर्यं । सन्नाय (॥) क रुय वि
 द्रुह नाथ नाम निर्यह मय विरु वध्वं क शानि क रुध ॥ ॥
 गुवृष्म जन्मसं क्लेन वाभावा जावर्न गग ॥ विरु वध्वं क शानि क रुध ॥
 वलि वध्वं क शानि क रुध ॥ ॥ ॥

मम के टरु। जो द (मस ग या बा जा, म न यू य ४ क्य गत
॥ द व दान व ग न्ध व, वि म व न ग
बा क सा। यी य म ग रू यी ज या, कि यून ४ मा नू बा ज ना ॥ य
४ रू बा क य य क ति, य रू ४ बा क ४ रू नि दा। य रू व स व
स व त रू य, ग स्मा म रू वि वा न ल ॥

॥ स म्ब ग १२ २ मा य मा म पु य द न व मि
॥ १० न म ४ यी ल यी य ॥ ॥ उ द य व क्त रू य ल म थान व
म रू न्ध न ॥ म रू मा न रू व वि ष, रि म्ब लि ष दि वा क
न ॥ १ ॥ न क व लू म रू ग ज न क य न स रू न ल ॥ स
फा न्ध न थ मा रू टा य रू ना शी न मा म्ब रू ॥ २ ॥ ॥ नि धी
॥ ३ ॥ ॥ म रू दा क ल्या न

२७ नमः श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ काका वदन काया
काका या पलुहं कृत्वा दाद निंदतु श्रेष्ठ वन रुग स
मा बल लारु मा त था सुख रु घन घन गभ्यत ॥
॥ ॥ पूर्व सा सं कख हात सा मन सहात पागु गु
रु शयीव ॥ आ न सा सं कख हात सा पन दणः

या हि द वा न वयिव ॥ दक्षिण सा सं का ष हात सा
महि र्वा ढ न दयीव ॥ ने सत्य सा सं का ष हात सा
मृ न क व मु दयी व ॥ पक्षि म सा सं का ष हात सा
ग फू या खा ढ न द यूव ॥ वायू य सा सं का ष हात सा
ही ढ खा ढ न दयीव ॥ उग्र सा सं का ष हात सा

वा नृणादिद्युख (येव) सूप विष्ट ४ तदा ह २२॥ क
पुनरेकां क मे (येव) न भावना दु न न क ४ व न्द ना क
घु ते (येव) सि ना क य मृ ग ग थ ॥ २३ ॥ स य र्द व क ह्यु (ग
लू य जा यो २) नि या ज य न ॥ २४ ॥ स म ३ क ग य ३ स
व ति दि य दा य क ॥ २५ ॥ अ थ वा क न वी रे सु ना ग व म्भ क
या व के ४ न (ग ह्य) मू क क नि न म य नो य नि खि त

॥ २६ ॥ अ क्ष र न ग र्ग ना म्नां शु वि ४ या त ह्यु य ४ य (० ग ४
न स ल क्षी रु व हृ दि ४ शु क य क य थ ग नि ॥ २७ ॥ वि ले
य न क लि यू (ग वा य पू र रु व कू र्व ॥ क नी ग रु वा लु क व
ज क नी र न वा व न ॥ २८ ॥ ग लु क्ता रु रु न य (ग नी ल क ल
स मी य न ४ स न यू य व र (ग व या व च (लु व्वा व धि ॥ २९
॥ नी थ दू ग म (स लि (ग म धि प्र रु न क य न ॥ लि ग उ उ रु

[illegible]

मयं रुवंत ॥ शिमासुया ० मा १ नं सहजा मडु नाप्रिय ॥
 ३३ ॥ वधूरो ० मिगुहा गं वडुमा सेडुया ० क ४ ॥ यैवमं सु
 तसमाने पक्ष्म ॥ सत्रिय नो जन ॥ ३४ ॥ सया मा १ डुललि
 की ० म १ ० म १ ० रुव ॥ नव सु सव्वथा नान्य सिद्धि तु दम
 सा सत ४ ॥ ३५ ॥ प्रकाद ० म मन ४ कामा ० वडुव ० नती रुव
 त् ॥ श्रीमह ० वया रुद ० य ४ क ० नित्य सा दत ४ ॥ ३६ ॥ गस्यव

सृगनिनासि लाकपेवयू (गयू गे) ॥ तथा नेकं सपयलु
हीमरुत्रवयासुध ॥ ३८ ॥ अतिमाद्यष्ट सिद्धिषु लरु =
हीमयसादन ॥ ५५ ॥ ॥ ॐ ति श्रीवसुधायामनं हं नव क
ये श्रीरुन कृमान सवा दधी हीमसेन, शारुन गतनाम
समाय ॥ ॥ श्रीरहीमसेन, प्रीतिनरु ॥ ॥ शु रुममु

॥ ॐ नमः ॥ श्रीगुनय ॥ सीसानसिन्धु नलोकरु गुं वधुगु
नन्मूर्ति निवस्वरा वा । नजीसि यवायि दयक जानो तीथ
रिधक प्रियमावरु नि ॥ ॥ ॥ ॥ ॐ नमः ॥ श्रीगलयतय ॥
यागः सनासि गलनाथमना धवर्धु सिधुन (लो) दनवन
पवनययाने । उदलुखलु यनिखलु नवेलुदलु माख
लुलादि सुनमयक ददवर्ध ॥ ॥ ॥ यागन मासि वरुना
ननमानमाना, मिक्कानू कूलमखिलं सुहृलं ददामि ।

ननु दिव्यद्विदनायकयत्नसूयः पूयविलासतु नमिव
था ४ निवाय ॥ २ ॥ प्रागुरुजाम्पूरुयलाकवि (म) कपान ६
दोकागुर्द्विजवर्नननकं न नाख्यामूरानकाननवि
नाथनरुव्यवाहसूसाहवदनयनं निवथा ४ निवाय ॥ ३ ॥
प्राकपयामिदलाक नवसाया कदायकी य ४ य (०) त्या
ननूलाय सर्वसिद्धि सवाप्रयान् ॥ ४ ॥ ॥ नमः ४ श्रीसू
यामि ॥ प्राग ४ स्मनामिखनू नसाविदुर्वप्रत्य नूयहिमः

लघुवाथननूर्यरूषि। सामायेनिस्यकि नक्ष ४ प्ररुवा
दिहुरुं व (म) रुनात्मकमलसू वि वि न्यरावी ॥ १ ॥ प्राग
नमा मिगन लि तनूवाक्षनाहि पुत्रादय पूर्वकसू ननूव
वि नंद ॥ २ ॥ प्रियमावनविनियं हं तु नक्षि लाक यानक्षपन
म नूय नक्षि कव ॥ २ ॥ प्रागुरुजामि स विना नमनू नक्षि
वि प्री वधि नि नि न पि क पला गहानं न सर्वसू लि कलना
मककालसू लि (म) क ४ वं न विभा द न मा दि य वी ॥ ३ ॥

90

٧

ॐ नमः श्रीगणेशाय ॥ प्रागः समनामिनिवृत्तक
मननकमाद्यैर्वदन्तवद्यमनस्वपूर्वमहान्तं नामादि
रुदवहितिं तेषु गतावशुन्यं संसात्रागहनमोषधमद्वि
नीयं ॥ १ ॥ प्रागन्तमांमिनिनिर्गमिनिजाद्वेदं दृष्टुं
स्ति तेषु लयकात्रनमादिदव विष्णुर्वीद्विनिगवि
ष्यमनकृत्तुर्प संसात्रागहनमोषधमद्विनीयं ॥ २ ॥
प्रागहनगामिरुवरीतीहनस्त्रुर्गममधनद्वेषरुवा

हनममिनिर्विकर्षा स्वदा मूलवददाहयहस्तमिर्ग
संसात्रागहनमोषधमद्विनीयं ॥ ३ ॥ प्रागः समूक्तो
यमिनिर्विद्विष्टः कथययथनूदिनयठनि ॥ गदू ४ ॥
गामवद्वद्वममिर्विर्ग हित्वा पुदं मध्वनमायूवनिह
॥ ४ ॥ ॐ नमः श्रीगणेशाय ॥ प्रागः समनामिनिन
दिन्दूकला कलास्या सद्वत्तवत्तकनकृष्टे तद्वनरु
षा दिव्यायूष्मयनस्त्रीलसहस्रहस्तान्कोत्तल

कृविपदा इयुगपत्प्रभा ॥ ॥ प्रागर्त्तमामि महिषा
सूत्रवत्सु नृ नियत्यवत्सु नृ नृखलु नृ मादकास्या ॥
वृक्षादिदवमहिमायदक्षारुणीलावली समस्तसूत्रम्
हिममवत्सु ॥ २ ॥ प्रागर्त्तमामि महिलाषदाया
अशी समस्तसूत्रम् इति नायहकि ॥ स सा नृवधनवि
भावनहृत्तुर्गामायायनामनधियाम्यवत्सु विष्णु ४
॥ ३ ॥ ॥ श्री कृष्णमिदं दद्यात् ॥ श्रीलुकाया प ॥ ० ॥ नृ ॥ प्रा

नृत्तकायसंगत सद्वाक्कामानवाप्रयात ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥
परागपत्सु नृ पविर्त्तु प ॥ ० ॥ स्मरेत्तु नृ यो वृत्तु ॥ ४ ॥
स्वप्ननामं द्रितितु नृ स रुवच्चसत्यरुमेवत्तु प्रसादान
॥ ५ ॥ ॥ ॥ मित्राह मित्रमाय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ गुरु ॥ ॥
॥ ॥ नमः ॥ श्रीगुरु नमः ॥ ॥ जीवात्मानं यत्नमात्मानं
ज्ञानं ध्यानं योगदानं ॥ ननु श्रीवधिकं ननु श्रीवधिकं ॥
निवर्त्तमानं नृ निवर्त्तमानं ॥ ॥ ॥ प्रागर्त्तमामि महिलाषदाया

स्वर्गस्तु गङ्गुकि मूर्कि ॥ पूर्णमिष्टरूपकलर्गं ननु प्रा
नधिकं २ निवर्णमसनग २ ॥ २ ॥ विष्णुर्हकिं पूजनं वनिर्
वेषू वसे वा मानि गुरु किं ॥ विष्णुर्हकिं वयू नथार्गं न
नु प्रा नधिकं २ निवर्णमसनग ४ २ ॥ ३ ॥ वानं पुष्कं नति वि
विधर्मं यानमहं सरिद्रु कवनिर्ग ॥ ननु प्रा नधिकं २
निवसासनग ४ २ ॥ ४ ॥ पुत्या हानं यद्विद्ये जित्वा शाना
यामन्यासविधनं ॥ ५ ॥ पूजा गयनं पवनिर्गं ननु प्रा

नधिकं २ निवर्णमसनग ४ २ ॥ ५ ॥ का सिद्धं मृदु वना
दोमला, प्रियं नारीमा वगलायुष्म ॥ श्रीमातं गीधूमा
गाता ननु प्रा नधिकं २ निवर्णमसनग ४ २ ॥ ६ ॥ मत्स्यं क
र्म श्रीकोलाहं नवरु निरूपं वासनवनिर्ग ॥ ननु प्रा नधिकं २
निवर्णमसनग ४ २ ॥ ७ ॥ श्रीनघूनाथं श्रीरुद्रनाथं श्रीरुद्रदवधो
ज्जकली ॥ श्रवणादादधवता विधानं ननु प्रा नधिकं २ निव
र्णमसनग ४ २ ॥ ८ ॥ गङ्गा काशी कायी नारा माया मृगश्रिवा

सथूना ॥ जमूना प्रवायू ष्च न तीथ
 सनग ४२ ॥ ६ ॥ (अकल गेमन (अयू ल त न न व
 वनगनन ॥ अग सर्व सुद निमिरु नग भाव विदो न व भ स
 नग ४२ ॥ १० ॥ उलगी स वा साग निरु वि न ग सा ग न स ग म म
 किं ॥ कि म प न म धि क रु ष रु किं न भा व धि क र नि व भ
 सनग ४ ॥ ११ ॥ अग लो य प थ ग निरु प ग ४ का ल नि श्र व वि रु ॥
 श्री व क्ता उ ग य न ध य न रु ल स र्व न गु वा व धि क र नि व भ स न ग

४२ ॥ १२ ॥ ॥ गि श्री रु स वा न म भु न ग रु ग्रा द न क र स
 पू र्ण स सा र्क ॥ ॥ रु म रु ॥ ॥ स र्वा क र्या न रु व रु ॥ ॥
 २ रु न स श्री व द्या य ॥ ॥ नू य रु गि न ना थ श्री गी रु स
 धि न रु न ॥ सृ ग रु व रु मा सा म वि रु मा ला धि रु म श्री
 ॥ १ ॥ उ ष य म श्री सा म भ ॥ उ द को रु म क र
 म रु रु पू र्ण व रु प्र की रु ना
 व स सा र्क ॥ ॥ रु म स न स र्क